महा पर्व, रक्षा बन्धन

श्री स्वामी सनातन श्री

येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः ।
तेन त्वाम प्रतिबद्धमामी रक्षे माचल माचल ।

बाँधा था जिसने असुर राजबली को, उस महा-महाबली दानवेन्द्र को, जिसके कारण सम्पूर्ण देवत्व संत्रस्त हो उठा था। उन्हीं महा विष्णु का साक्षी देकर तुझे राखी बाँध रहा हूँ। वे नारायण ही तेरी रक्षा करें तथा तू नारायण सा होकर निराश्रित, दीन और सताये हुए लोगों की रक्षा करे।

आदि काल से चली आ रही सनातन परम्परायें !

दैत्य राज बली ने तीनों लोकों को जीतने की घोषणा कर दी। उसने देवताओं को भी जीत लिया और जीत के यज्ञ आदि आरम्भ कर दिये। सम्पूर्ण देवत्व भयभीत हो उठा। उन्होने महाविष्णु से देवत्व की रक्षा की प्रार्थना की। दयानिधान महाविष्णु मान गये। उन्होंने एक बौने ब्राह्मण का बावन अंगुल का रूप धारण किया तथा महाराज बली की ओर चल दिये।

दैत्य और दानव दोनों ही ईश्वर के परम् भक्त थे। दोनों धार्मिक भी थे तथा दानी भी। सांसारिक मान्यताओं को लेकर ही दैत्य और दानव एक दूसरे के विपरीत थे। दैत्यों की मान्यताओं में ईश्वर ने जो कुछ बनाया है वह दैत्यों तथा असुरों के आनन्द भोग के लिए है। समर्थवान दैत्य, मनुष्यों को, गुलाम बना सकता है। उसकी मान्यता में नारी भी पुरुष की भोग्या है। वह मिट्टी के खेत के समान है। नारी को मनुष्यता के अधिकार नहीं दिये जा सकते हैं। पुरूष जैसे चाहे उसे

भोगे। जितनी स्त्रियां चाहे रखे। वह उन स्त्रियों को किसी को दान कर सकता है, भेंट कर सकता है, गिरवी रख सकता है, बेंच सकता है अथवा त्याग सकता है। परन्तु नारी पुरुष की आज्ञा बिना बाहर नहीं जा सकती। दैत्य दूसरे राज्यों पर आक्रमण करके वहां के लोगों को गुलाम बनाते थे। उनसे पशुवत् व्यवहार करते थे तथा उनका शोषण करते थे। इसलिए दैत्य जब-जब बलशाली होते हैं देवता भयभीत हो जाते हैं।

देवताओं की मान्यता में, ईश्वर ने मनुष्य को प्राणी मात्र की समर्पित सेवाओं के लिए ही बनाया है। पिता बाग का माली है। सम्पूर्ण सचराचर बाग के समान है। आत्मा होकर परमेश्वर ही इस बाग को बनाता है, इसका संचालन और रक्षा करता है। परमेश्वर के द्वारा बनाये इस बाग में मनुष्य एक माली के समान है। प्राणी मात्र के प्रति समर्पण, सेवा तथा आत्मा रूपी परमेश्वर से अद्वैत करना अर्थात् योग करना ही उसके जीवन का मात्र लक्ष्य है। नारी भी पूज्य है। किसी को दास बनाना मानवता के मुंह पर तमाचा मारना है। ईश्वर के नाम पर कलंक है। परमेश्वर के द्वारा बनाये सचराचर में सबको सुखद जीवन देना, सभी को जीने का स्वतंत्र अधिकार प्रदान करना तथा सभी की रक्षा करना, मनुष्य मात्र का धर्म है। यही मान्यता देवताओं की रही है इसीलिए जब-जब असुर और दैत्य शक्ति पाते थे मानवता तड़प उठती थी।

बावन अंगुल के ब्रह्मचारी का रूप धारणकर महाविष्णु यज्ञस्थली पर आये। नन्हें ब्रह्मचारी ने उनसे त्रिवाचक अर्थात् तीन बार संकल्प लेने के लिए कहा। शुक्राचार्य के मना करने पर भी राजा नहीं माने और उन्होंने संकल्प ले लिया। वामन ने केवल तीन कदम धरती मांगी थी। जिसे महाराज बली सहर्ष देने के लिए तैयार हो गये। बौने ब्रह्मचारी ने अपना रूप बढ़ाना शुरू किया। एक कदम में उसने दोनों लोक नाप दिये। दूसरे कदम में उसने सारी पृथ्वी नाप ली। तीसरा कदम धरने के लिए उसने राजा बली से पूछा कि तीसरा कदम वह कहां पर

रखे ? तीसरे कदम के लिए कुछ भी बाकी नहीं बचा था। राजाबली स्वयं लेट गये तथा ब्रह्मचारी से कहा तीसरे कदम में वह दैत्य राज बली की देह को नाप लें। महा विष्णु ने ऐसा ही किया। राजा बलो को उन्होंने सीमित कर लिया, जिससे दैत्य धरती के मनुष्यों को अधिक पीड़ा न दें। उन्हें बन्दी बनाकर, उनके साथ दुर्व्यवहार, दुराचार, तथा अनैतिक रूप से उन्हें पीड़ा न दें, उन्हें सताये नहीं।

रक्षा बन्धन का महा पर्व हम सबके लिए अमृतमय उद्देश्य लेकर आता है। जब रात गहरी अंधियारी होती है। दूर-दूर तक असुरत्व का काला अन्धेरा फैला रहता है। तभी पूरब से एक नन्हें से बौने ब्रह्मचारी बनकर, सूरज देव प्रकट होता है। दो कदम में ही धरती और आकाश को प्रकाश से आलोकित कर देता है। अंधेरे का दैत्य, परछायीं बनकर सिकुड़ जाता है। भरी दोपहरी में जब वह ठीक गगन के ऊपर तप रहा होता है तो अंधेरे की परछाई को सिमट कर अधिकाधिक सीमित होना पड़ता है। तीनों लोकों में फैले अन्धकार को एक छोटा सा वामन अर्थात् सूर्य नारायण मिटाके रख देते हैं। उसी प्रकार रक्षाबन्धन भी हमारे भी जीवन से पाप तथा अन्याय के अन्धकार को मिटाये। हम सत्य रूपी देवता को प्राप्त हों। निरीह और सताये हुए तथा असहाय स्त्री पुरूष और जीवधारियों की हम सब विष्णु बनकर रक्षा करें। सभी को सुखद जीवन दे। सभी के सुख का कारण बनें। धरती पर व्याप्त पीड़ाओं का विनाश करें। दूसरों को सताने वाले असुर प्रवृतियों को अपने भीतर से मिटा दें, समाज से मिटा दें——हर और समर्पण, त्याग, प्रेम, सहयोग और सद्भाव के देवत्व को व्यापक रूप से फैलने दें यही आज का महापर्व है।

हरि ॐ नारायण हरि !!